शोध प्रतिवेदन

"शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन, अभिरूचि, अभिवृत्ति व अभिक्षमता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।"

निर्देशक
श्री मनीष सैनी
(व्याख्याता)

प्रस्तुतकर्त्री
अर्चना कुमारी वर्मा
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)
(सत्र 2015-17)

1. प्रस्तावना

सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु शिक्षक है। वह सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया की श्रृंखला में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा की किसी भी योजना का सूत्रधार ही होता है।

आज के प्रगतिशील युग में प्रत्येक देश का भविष्य शिक्षा पर ही निर्भर करता है। शिक्षा एक सौद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य को सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जा सकता है। चीनी दार्शनिक कुआन हसू ने बड़ा सही कहा था कि "अगर आप एक वर्ष की योजना बनाना चाहते हैं तो पौधे लगाइए और अगर आप दस साल की योजना बनाना चाह रहें है तो लोगों को पढ़ाइए।" अर्थात् थोड़े से व्यक्ति शिक्षित हो जाए तो हजारों शिक्षित लोग हो जाएंगे। अगर हम दुनिया की तरफ नजर दौड़ाएं तो देखें कि जो राष्ट्र शिक्षा पर जोर देते हैं, उन्होनें महत्वपूर्ण

प्रगति की है। जीवन एवं जीवन शैली को सुंदर बनाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है।

अध्यापक शैक्षिक प्रक्रिया का वह पावन माध्यम है जिसके सतत् प्रयास से ही विद्यार्थी अज्ञान एवं अंधकार के तामसिक शक्तियों से संघर्ष कर सकते हैं। शिक्षक में ही वर्तमान एवं भविष्य का प्रतिबिम्ब निर्माण करने की शक्ति होती है।

एच.जी. वेल्स के अनुसार, "अध्यापक इतिहास बनाने वाला होता है। किसी भी देश का इतिहास उसके विद्यालयों में लिखा जाता है और विद्यालय अध्यापक के गुणों से परे नहीं रह सकता।"

सभी शिक्षक जन्मजात नहीं होते है। अतः शिक्षित एवं प्रशिक्षित अध्यापक ही कक्षा–शिक्षण को रोचक एवं प्रभावशाली बनाने में समर्थ होता है। बालकों के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करने, सामाजिक, राष्ट्रीय उत्तरदायित्व को सम्पूर्ण तन्मयता के साथ वहन करने योग्य बनाने के लिए अध्यापक का प्रशिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है।

रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार "एक अध्यापक सच्चे अर्थों में तब तक अध्यापन कार्य नहीं कर सकता जब तक कि वह स्वयं अध्ययन नहीं करता है, एक दीपक दूसरे दीपक को जब तक प्रज्वलित नहीं कर सकता जब तक कि वह स्वयं प्रज्वलित नहीं है। ऐसा अध्यापक जो अपने ज्ञान क्षेत्र के शीर्ष पर होता है वह अपने दिमाग में ज्ञान का समावेश तभी कर सकता है जब तक कि वह अपने छात्रों के लिए अध्ययन करे। सत्य हमें केवल सूचना नहीं प्रदान करते बल्कि प्रेरणा भी प्रदान करते हैं।

अतः किसी भी देश के विकास में शिक्षा की अहम् भूमिका होती है एवं शिक्षा को प्रदान करने वाला शिक्षक स्वयं शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखने वाला होना चाहिए। भावी शिक्षकों में शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति एवं गुणात्मक अभिक्षमता उत्पन्न करने हेतु प्रशिक्षण अतिआवश्यक है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

प्राचीनकाल में पुस्तकों की उपलब्धता नहीं होने के कारण एक अध्यापक जो भी ज्ञान रखता था वहीं छात्रों तक पहुँचाना ही उनका उद्देश्य था। किन्तु आज सूचना तकनीकी, सम्प्रेषण तकनीकी तथा मनो–तकनीकी ने शिक्षा पर बहुत अधिक

प्रभाव डाला है। अतः अध्यापक को ज्ञान की संकुचितता से निकलकर विस्तृतता को अपनाने की आवश्यकता है। साथ ही भिन्न तकनीकियों के ज्ञान के साथ इनके प्रयोग की क्षमता में निपुण होना भी आवश्यक है।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान दावा करते हैं कि उनके प्रशिक्षण कार्यक्रम छात्र–अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति एवं अभिक्षमता में उपयुक्त विकास करते हैं। "क्या वास्तव में ये कार्यक्रम अध्यापक की अध्यापन अभिवृत्ति एवं अभिक्षमता में उपयुक्त विकास करते हैं।" यह एक विचारणीय विषय है क्योंकि संबंधित साहित्य का अध्ययन करें तो ज्ञात होता है कि अध्यापक की विशेषताएँ, शिक्षण कौशल के विकास के तरीके और शिक्षकों की प्रभावशीलता आदि से संबंधित अध्ययन ही अधिक हुए हैं। परन्तु अध्यापक प्रशिक्षण का प्रशिक्षणार्थी की अभिवृत्ति एवं अभिक्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित अध्ययन बहुत ही कम मात्रा में किए गए हैं। अतः इस क्षेत्र में शोध किए जाने की नितान्त आवश्यकता है जो कि शैक्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम को अधिक विकसित करने में सहायता प्रदान कर सकते हैं जिससे कि वह भविष्य में ऐसे शिक्षक तैयार कर सके जो अध्यापन कार्य के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति एवं अभिक्षमता रखते हों। साथ ही 21वीं शताब्दी में शिक्षण क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो।

वर्तमान में शिक्षक शिक्षा के नियमित पाठ्यक्रम में प्रवेश करने से पूर्व शिक्षक परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इस परीक्षा के माध्यम से प्रवेश कर रहे लोग अध्यापन के प्रति किस प्रकार की अभिवृत्ति रखते है? क्या शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के कार्यक्रम इतने महत्वपूर्ण हैं कि छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति एवं अभिक्षमता पर सकारात्मक प्रभाव डाल पाए? इन्हीं जिज्ञासाओं की संतुष्टि हेतु शोधकर्ती को प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता महसूस हुई।

3 समस्या कथन

"शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन, अभिरूचि, अभिवृत्ति व अभिक्षमता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।"

4 विशिष्ट शब्दों की व्याख्या

(1) शिक्षक

हुमायुँ कबीर के अनुसार

"शिक्षक राष्ट्र के भाग्य निर्णायक हैं। शिक्षक ही शिक्षा के पुर्ननिर्माण की महत्वपूर्ण कुंजी है। शिक्षक ज्ञान लोक का पुन्ज है। वह बालक के मानसिक अंधकार को दूर कर अपने ज्ञानदीप से उसे आलोकित करता है। हमारे समाज में अध्यापक को परम्परा से ही उच्च स्थान प्राप्त है।"

(2) प्रशिक्षण

"एक शिक्षक का ज्ञान गहन होता है, दूसरे में उस ज्ञान को प्रदान करने की क्षमता है परन्तु जिस शिक्षक में ज्ञान और प्रशिक्षण की दक्षता दोनों होते हैं, वह सबका सिरमौर होता है।" प्रशिक्षण का अर्थ है सीखने वाले को किसी कार्य में अभ्यास द्वारा दक्षता प्रदान करना। इसमें कार्य का सिद्धान्त एवं प्रयोग दोनों पक्ष सम्मिलित होते हैं। **थामस ग्रीन** ने कहा है कि "वांछित व्यवहार के प्रशिक्षण में बुद्धि का प्रकटीकरण बहुत कम होता है। प्रशिक्षण का सीधा सम्बन्ध व्यक्ति के व्यवहार से है जो कि एक गत्यात्मक कौशल के रूप में प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त करता है।"

(3) अभिवृत्ति

अभिवृत्ति एक सामाजिक प्रत्यय एवं मानसिक पहलू है। इसका सम्बन्ध सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार के मानसिक पक्ष से होता है। अभिवृत्तियाँ किसी वस्तु, व्यक्ति, संस्था एवं स्थिति के प्रति व्यक्ति विशेष के विचारों से अवगत कराती है।

रेमर्स, रूमेल एवं गेज के अनुसार "अभिवृत्तियाँ अनुभवों के द्वारा व्यवस्थित वह संवेगात्मक प्रवृत्ति है जो किसी मनोवैज्ञानिक पदार्थ या वस्तु के प्रति सकारात्मक नकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया करती है।"

थर्सटन के अनुसार "किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु या यदार्थ से संबंधित ऋणात्मक या धनात्मक प्रभावों की मात्रा ही अभिवृत्ति है।"

(4) अभिक्षमता

अभिक्षमता एक वर्तमान स्थिति है जो भविष्य की ओर संकेत करती है।

दूसरे शब्दों में अभिक्षमता व्यक्ति की तत्परता अथवा रूझान है जो किसी पेशे या कार्य में भावी सफलता पाने हेतु आवश्यक है व जिसे सही मार्गदर्शन व शिक्षा द्वारा और विकसित किया जा सकता है।

वारेन के अनुसार – "अभिक्षमता किसी व्यक्ति की प्रशिक्षण के बाद ज्ञान, दक्षता या प्रतिक्रियाओं को सीखने की योग्यता है। जैसे भाषा बोलने या संगीतोत्पादन की योग्यता"।

5 अध्ययन के उद्देश्य

शोधकर्त्री ने अपने अध्ययन के निम्न उद्देश्य रखे है :–

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का छात्राध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवं अभिक्षमता का अध्ययन करना।
3. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का छात्राध्यापकों की कक्षा–कक्ष शिक्षण अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन ज्ञात करना।
5. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का छात्राध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना।
6. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का छात्राध्यापकों की छात्र केन्द्रित अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना।
7. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का छात्राध्यापकों की शिक्षण प्रक्रिया अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना।
8. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का छात्राध्यापकों की विद्यार्थियों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
9. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का छात्राध्यापकों की शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

6 प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का छात्राध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवं अभिक्षमता पर प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की अध्यापन अभिक्षमता पर प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की अध्यापन अभिवृत्ति पर प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति पर प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
5. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की कक्षा कक्ष अभिवृत्ति पर प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
6. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की छात्र केन्द्रित अभिवृत्ति पर प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
7. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की शिक्षण प्रक्रिया अभिवृत्ति पर प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
8. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की विद्यार्थियों के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
9. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षण का छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

7 अध्ययन की परिसीमाएँ

आज शोध का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। एक लघुशोध अध्ययन में सम्पूर्ण क्षेत्र को शामिल किया जाना सम्भव नहीं है।

शोधकर्ता कितनी ही उत्साही क्यों न हो शोध कार्य में परिसीमाओं का बंधन अपरिहार्य है। उपलब्ध समय व साधनों के अनुसार शोधकर्मी ने उपयुक्त अध्ययन विधि, उपकरण, न्यादर्श एवं सांख्यिकी का चुनाव कर अपने लघुशोध कार्य को निम्न सीमाओं से परिसीमित किया है–

1. भौगोलिक क्षेत्र की दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन केवल जयपुर जिले तक ही सीमित है।
2. समयाभाव के कारण जयपुर जिले के दो शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों को ही चुना गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की अध्यापन अभिवृत्ति व अभिक्षमता को ही मापा गया है।
4. प्रस्तुत अध्ययन के लिये केवल बी.एड. प्रशिक्षण महाविद्यालयों को ही चुना गया है।
5. प्रस्तुत अध्ययन में 120 छात्राध्यापकों (60 महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थी एवं 60 पुरूष बी.एड. प्रशिक्षणार्थी) को ही सम्मिलित किया गया है।

8 अनुसंधान विधि :–

सर्वेक्षण विधि – सर्वेक्षण विधि वर्तमान काल में विद्यमान तथ्यों का अध्ययन वर्णन तथा व्याख्या करने का उत्तम साधन है।

9 अध्ययन के चर :–

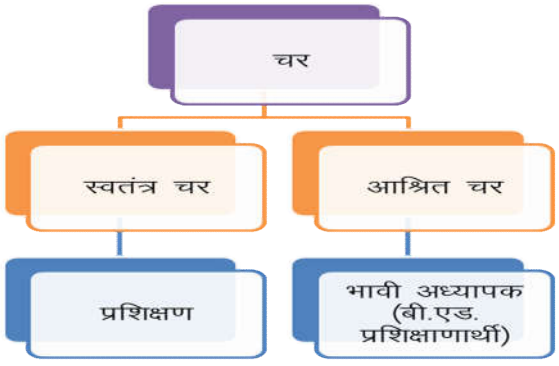

10 प्रदत्तों की प्रकृति :–

❖ प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक एवं गुणात्मक दो प्रकार की होती है।

❖ इसमें मात्राात्मक एवं गुणात्मक प्रदत्तों का प्रयोग किया गया है।

11 जनसंख्या :–

यंग 1996 :– "वह समस्त समूह जिसमे प्रतिदर्श का चयन किया जाता है समष्टि या सप्लाई कहलाती है।"

जैसे :– चिकित्सक द्वारा एक प्रशिक्षण मे सम्पूर्ण शरीर का रक्त जनसंख्या है। चावल के उदाहरण में बर्तन का सम्पूर्ण चावल ही जनसंख्या है।

प्रत्येक शोध कार्य हेतु जनसंख्या का निर्धारण आवश्यक है इसी जनसंख्या के सर्वेक्षण से तथ्यों तथा प्रदन्तों का संकलित किया जाता है। प्रस्तुत शोध हेतु जयपुर जिले के छात्राध्यापकों का चयन किया है।

12 अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श :–

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के बी.एड. 120 प्रशिक्षणार्थियो को लिया गया जिनमें 60 पुरूष तथा 60 महिला शिक्षक प्रशिक्षणाथी है।

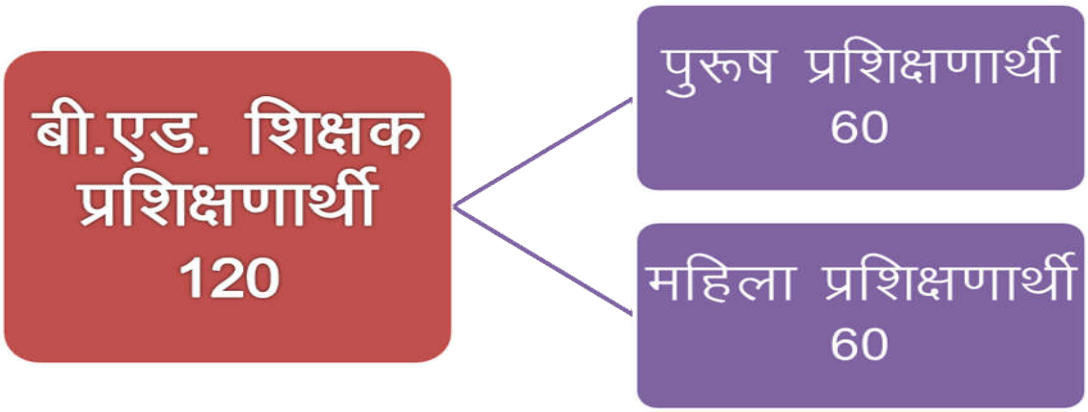

13 प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उपकरण के रूप में मानकीकृत उपकरण के रूप में 'डॉ. सुरेन्द्र एस. दहिया एवं डॉ. एल.सी. सिंह द्वारा निर्मित उपकरण' का प्रयोग किया जायेगा।

14 प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

सैलिंग मैन :–

"सांख्यिकी वह विज्ञान है जो किसी अनुसंधान क्षेत्र के प्रकाश डालने की दृष्टि से संकलित संमकों के संग्रहण वर्गीकरण, तुलना और निर्वचन करने की विधियों का विवेचन करता है।

15. भावी शोध हेतु सुझाव

अध्यापक शिक्षा का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। इस क्षेत्र में भावी अनुसंधान हेतु कुछ समस्याएँ प्रस्तावित की जा रही हैं जिनके बारे में आगे अध्ययन संभव हो सकता है–

1. प्रस्तुत अध्ययन सीमित छात्राध्यापकों पर सीमित समय में किया गया है। यह अध्ययन एक बड़े आदर्श पर किया जा सकता है।

2. छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व के विभिन्न प्रतिमानों का अध्ययन किया जा सकता है।

3. अध्यापन अभिक्षमता व अध्यापन अभिवृत्ति के लिये अन्य उपकरणों का चयन कर सकते है।

4. प्रशिक्षण संस्थाओं की वर्तमान स्थिति व उसमें अपेक्षित सुधारों के बारे में छात्राध्यापकों के विचारों का अध्ययन किया जा सकता है।

5. शहरी व ग्रामीण छात्रों की अध्यापन अभिवृत्ति व अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

6. अध्यापन अभिवृत्ति व अध्यापन अभिक्षमता पर प्रतिपुष्टि कौशल के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

7. अध्यापन अभिवृत्ति के अनुसार कक्षा–कक्ष में अध्यापक के व्यवहार का अध्ययन किया किया जा सकता है।

8. विभिन्न संकायों के छात्रों की अभिवृत्ति व अभिक्षमता का अध्ययन किया जा सकता है।

9. छात्राध्यापकों की अपने प्रशिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया जा सकता है।

10. छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि व अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

11. अध्यापक शिक्षा के बारे में छात्राध्यापकों के विचारों का अध्ययन किया जा सकता है।

12. छात्राध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति व अध्यापन अभिक्षमता पर उनके शिक्षकों के प्रभाव को ज्ञात किया जा सकता है।

13. छात्राध्यापकों के प्रशिक्षण के उद्देश्यों व उनके लक्ष्यों का अध्ययन किया जा सकता है।

14. छात्राध्यापकों की मन प्रकृति, स्वप्रत्यय, बुद्विलब्धि, सामाजिक परिपक्वता आदि का अध्ययन किया जा सकता है।

15. अध्यापक बन जाने के बाद व प्रशिक्षण काल दोनों में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।